द्वितीय अफीम युद्ध, [1856-60 ई०]
[Second Opium war]

Ashish Kumar Thakur
B.A. II, History(H), Paper-IV
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur.

प्रथम अफीम युद्ध के पश्चात ब्रिटेन के साथ-साथ अन्य यूरोपीय शक्तियों ने भी चीन की कई व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त कर ली थी परन्तु कालान्तर में संधि में कुछ ऐसे दोष प्रकट हुए, जिन्हें विदेशी दूर करना चाहते थें। अंग्रेज संधियों में और अधिक विस्तार चाहते थें। अमेरिका के साथ ह्वांगिया की संधि (2 July, 1844) एवं फ्रांस के साथ की गई ह्वामपोआ की संधि (Oct, 1844) में तो इस बात की व्यवस्था थी कि 10 वर्ष के पश्चात पुनः संधियों का पुनरीक्षण किया जाएगा।

अतः जब इन विदेशी शक्तियों ने चीनी सरकार के समक्ष संधि पुरीक्षण की माँग रखी तो उन्होंने कोई ध्यान नहीं रखा। परिणामस्वरूप अंग्रेज स्पष्ट हो गया कि बिना शक्ति प्रयोग के संधि पुनरीक्षण नहीं हो सकता अतः द्वितीय अफीम युद्ध की परिस्थिति निर्मित हुई। द्वितीय अफीम युद्ध के निम्नलिखित कारण थें –

[1.] चीनी शासकों का भ्रम और अयोग्यता :–
चीनी मंचु शासक प्रथम अफीम युद्ध में हुई अपनी हार को अस्थाई और दुर्भाग्यपूर्ण मानते थे परन्तु उसे विश्वास था कि वह विदेशियों को नियंत्रण में रख सकते हैं एवं अपनी अखण्डता की रक्षा करने में सक्षम हैं जो उनका एक भ्रममात्र था। वस्तुतः प्रथम अफीम युद्ध के हार ने मंचु शासकों की अयोग्यता एवं अक्षमता को उजागर कर दिया था। देश में भ्रष्टाचार, शोषण, बेकारी, भुखमरी, षड्यंत्र एवं अफीम की तस्करी के कारण स्थिति दुर्बल एवं अराजकतापूर्ण होती जा रही थी। इन परिस्थितियों से पश्चिमी शक्तियाँ लाभ उठाकर अपनी साम्राज्यवादी महत्वकांक्षाओं को संतुष्ट करना चाहती थी।

[2.] चीन में नानकिंग की संधि से असंतोष :– चीनी लोग 1842 ई० में नानकिंग की संधि तथा विदेशियों को 5 बंदरगाह खोल दिया जाना काफी अपमानजनक मानते थे। अतः वहाँ विदेशियों के प्रति तीव्र घृणा की भावना व्याप्त थी।

[3.] चीनीयों को बलपूर्वक मजदूर बनाया जाना :– चीन में व्याप्त बेकारी और भुखमरी का लाभ उठाकर विदेशियों ने चीनियों को मजदूर के रूप में क्यूबा एवं पेरू आदि स्थानों पर भेजा एवं बलप्रयोग भी किया। मंचु शासन ने इसका खुलकर विरोध किया।

Ashish

Scanned with CamScanner

[4.] चीनी जहाजों से वसूली :-
विदेशियों ने जल डाकुओं को पकड़ने के बहाने चीनी जहाजों से उनकी रक्षा के नाम पर काफी धनराशि बसूल की।

[5.] व्यापारिक सुविधाओं के विस्तार की इच्छा :- ब्रिटिश व्यापारी नानकिंग की संधि (29 Aug. 1842) पर पुनर्विचार एव और अधिक विस्तार चहाते थे। फ्रांस व अमेरिका ने भी इसका समर्थन किया। उनकी प्रमुख मांगों में -
(i) चीन की आंतरिक मार्गों मे प्रवेश की सुविधा।
(ii) पीकींग मे राजदूत रखने की सुविधा।
(iii) शुल्क दरे समाप्त करने की सुविधा आदि प्रमुख थी। फरवरी, 1854 ई० में ब्रिटिश उच्चायुक्त लार्ड बोरिंग ने यह प्रस्ताव रखे।

चीनी प्रशासन ने इन मांगो की उपेक्षा की। अतः बल प्रयोग अपरिहार्य हो गया।

[6.] फ्रांसीसी पादरी को फांसी :- फरवरी 1856 ई० मे चीन के क्वांगसी स्थित अधिकारियों द्वारा एक कैथोलिक पादरी आंगस्टे चेपरी लेन को विद्रोह के आरोप में बन्दी बनाकर फांसी दे दी गयी। फ्रांस इसके लिए चीन को दण्डित करना चहाता था।

[7.] लोर्चा एरो जहाज की घटना :- यह घटना द्वितीय अफीम युद्ध का तत्कालीन कारण बनी। इस जहाज का मालिक एक चीनी था परन्तु उसका कप्तान एक अंग्रेज था और इस जहाज पर अंग्रेजी झण्डा फहराता था। चीनी अधिकारी जलदस्यु को पकड़ना चहाते थे अतः उन्होने ऐसे जहाज की तलासी ली तथा उसको 12 चालकों को बंदी बना लिया। ब्रिटिश वाणिज्यदूत ने इसका विरोध किया तथा 2 मांगे रखी - (i) जहाज चालकों को मुक्त करें।
(ii) घटना के लिए क्षमा मांगे।

चीनी शासन ने बन्दियों को मुक्त कर दिया किन्तु क्षमा मांगने से इंकार कर दिया। अंग्रेजो के लिए युद्ध का बहाना मिल गया।

युद्ध की घटनाएँ :- इस युद्ध मे अंग्रेजों का साथ फ्रांसीसियों ने दिया। अमेरिका तथा रूस युद्ध से अलग रहे। 30 May. 1858 को आंग्ल-फ्रांसीसी सेनाएँ पीकिंग के निकट तीन्सिन मे घुस गई चीनी सेनाएँ विदेशी सेनाओं का सामना करने मे असमर्थ था। अतः उन्हें संधि को बाध्य होना पड़ा।

Ashish

Scanned with CamScanner